नैक (NAAC) द्वारा 'A' ग्रेड प्राप्त

महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा

Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya

(संसद द्वारा पारित अधिनियम 1997] क्रमांक के अंतर्गत स्थापित केंद्रीय विश्वविद्यालय)

(A Central University established by Parliament by Act No. 3 of 1997)

प्रोफेसर कमलेश दत्त त्रिपाठी
हिंदी विश्वविद्यालय वर्धा के कुलाधिपति नियुक्त

वर्धा, दि. 16 अप्रैल 2018 : महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धा के अधिनियम, 1996 (1997 का 3) में उल्लिखित परिनियम की धारा 27 (।) के अंतर्गत कुलाध्यक्ष के रूप में अपने अधिकार का उपयोग करते हुए भारत के माननीय राष्ट्रपति महोदय ने जाने-माने विद्वान प्रोफेसर कमलेश दत्त त्रिपाठी को महात्मा गांधी अंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति के रूप में दिनांक 06.04.2018 से तीन वर्ष की अवधि के लिए नियुक्त किया है।

कमलेश दत्त त्रिपाठी (04.08.1938) काशी हिंदू विश्वविद्यालय के संस्कृत लर्निंग एंड थिओलॉजी विभाग में प्रोफेसर एमेरिटस रहे है तथा वर्तमान में भारत अध्ययन केंद्र, बीएचयू के अध्यक्ष हैं। मध्य प्रदेश सरकार के आमंत्रण पर उन्हें कालिदास अकादेमी, उज्जैन का निदेशक बनाया गया। वे 1981 से 1986 तक और फिर 2003 से 2007 तक निदेशक के रूप में कार्यरत रहे। उज्जैन के कालीदास अकादमी के निदेशक रहते हुए उन्होंने संस्थान को संस्कृत अध्ययन और थिएटर के एक अंतरराष्ट्रीय केंद्र के रूप में आकार दिया।

उन्होंने प्राध्यापक के.चट्टोपाध्याय (इलाहाबाद विश्वविद्यालय) से प्राप्त वेदों की परंपरा और महामहोपाध्याय पंडित रामेश्वर झा (वाराणसी) से प्राप्त टिर्किया दर्शन की परंपरा को आगे बढ़ाया। उन्होंने काशी हिंदू विश्वविद्यालय, वाराणसी के धर्म शास्त्र विभाग को धर्म शास्त्र एवं धार्मिक अध्ययन के एक महत्वपूर्ण विभाग के रूप में स्थापित किया।

1987 में प्रोफेसर त्रिपाठी को धर्मागम विभाग में प्रोफेसर नियुक्त किया गया था और उन्होंने दो बार संकाय संकायाध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वे 2000 से 2003 तक काशी हिंदू विश्वविद्यालय की कार्यकारी समिति के सदस्य भी रहे।

प्रो. त्रिपाठी, सन 2007 से वाराणसी के इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्र के सलाहकार रहे। प्रोफेसर त्रिपाठी ने यूरोप में प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों और दक्षिण एशियाई अध्ययन, कोपेनहेगन विश्वविद्यालय, डेनमार्क जैसे संस्थानों में अध्यापन का कार्य किया। उनके कई छात्र भारत, जर्मनी, जापान और फ्रांस के विभिन्न विश्वविद्यालयों में प्रोफेसर हैं। प्रोफेसर त्रिपाठी के गंभीर शोध आलेख दर्शन, सौंदर्यशास्त्र, रंगमंच, साहित्य और भाषाओं की राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय पत्रिकाओं प्रकाशित होते रहे हैं। संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शनशास्त्र और धर्म के क्षेत्र में उनकी सेवाओं के लिए उन्हें 2007 में भारत के राष्ट्रपति द्वारा सम्मानित किया गया। संस्कृत से अनुवाद के लिए उन्हें साहित्य अकादमी नई दिल्ली द्वारा भी सम्मानित किया गया। संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्ली ने उन्हें 2009 में फैलोशिप प्रदान की तथा 2015 में राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठ, तिरुपति ने उन्हें महामहोपाध्याय की उपाधि से विभूषित किया गया।

उन्होंने अनेक पुस्तकों और लेखों का संपादन और लेखन कार्य किया है। उन्होंने जापान, हॉलैंड, ऑस्ट्रिया, पोलैंड, फ्रांस, थाईलैंड, चीन, फिनलैंड, स्पेन और स्वीडन में विभिन्न अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलनों में भाग लिया। उनकी नियुक्ति पर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रतिकुलपति प्रो. आनंद वर्धन शर्मा तथा समस्त विश्वविद्यालय परिवार ने उन्हें शुभकामनाएं प्रेषित की हैं।

.....

Prof Kamalesh Datta Tripathi appoint as Chancellor of MGAHV

Wardha, April 6, 2018 : President of India as the visitor of the University has been pleased to appoint Prof. Kamalesh Datta Tripathi as the Chancellor of the Mahatma Gandhi Antarrashtriya Hindi Vishwavidyalaya, Wardha for a period of three years from April 6, 2018.

Kamalesh Datta Tripathi (04.08.1938), Professor Emeritus in the Faculty of Sanskrit Learning & Theology, (B.H.U.), is presently A Centenary Chair Professor of Bharat Adhyayan Kendra, B.H.U. Varanasi.

He was invited by Govt. of M.P. as Director, Kalidasa Akademi, Ujjain in 1981 and served as Director till 1986 and again from 2003 to 2007. As Director of Kalidas Akademi, Ujjain, for two terms, he shaped up the institution as an international centre for Sanskrit studies and theatre.

He was fortunate to have received the tradition of Vedas from Prof. K Chattopadhyay (University of Allahabad) and Trika Philosophy from Mahamahopadhyay

Pandita Rameshvara Jha (Varanasi) and with his blessings raised the Department of Religion to the status of Department of Religious & Agamic Studies, Banaras Hindu University, Varanasi.

Professor Tripathi was appointed Professor in the Department of Religious and Agamic Studies in 1987 and he occupied the position of Dean of the Faculty twice and also acted as a member of the Executive Committee of Banaras Hindu University from 2000 to 2003.

Prof. Tripathi has been an Advisor at the Indira Gandhi National Centre for the Arts, Varanasi since 2007. Professor Tripathi also taught as visiting faculty at reputed universities and institutions in Europe, such as the Ecole Pratique des Hautes Etudes, Paris, and Institute of South Asian Studies, the University of Copenhegan, Denmark. Many of his students are now professors in various universities in India, Germany, Japan and France. Professor Tripathi frequently contributes to national and international journals of philosophy, aesthetics, theatre, literature and languages. For his services to the Sanskrit Sahitya, Indian Philosophy & Religion, Professor Tripathi has received honours such as the Certificate of Merit in 2007 from the President of India and Sahitya Akademi New Delhi Award for translation from Sanskrit and his contributions to Sanskrit literary studies (2007). Sangeet Natak Akademi, New Delhi conferred on him its Fellowship in 2009 and Rashtriya Sanskrit Vidyapeeth, Tirupati conferred the title of Mahamahopadhyay on him in 2015. He edited and wrote many books and authored scores of research papers. He traveled several countries and also attended various International Conferences at Japan, Holland, Austria, Poland, France, Thailand, China, Finland, Spain and Sweden and also took part in various Conferences of the country. Prof. Tripathi has been congratulated by Prof. Girishwar Misra, VC, MGAHV, Prof. Anand Vardhan Sharma, Pro-VC and other officials of the University.

प्रोफेसर कमलेश दत्त त्रिपाठी विश्वविद्यालयाचे कुलाधिपती नियुक्त

वर्धा, दि. 16 एप्रिल 2018 : महात्मा गांधी आंतरराष्ट्रीय हिंदी विश्वविद्यालय, वर्धेचे कुलाधिपती म्हणून प्रोफेसर कमलेश दत्त त्रिपाठी यांची नियुक्ति करण्यात आली आहे. कुलाध्यक्ष म्हणून भारताचे माननीय राष्ट्रपती यांनी त्यांच्या नावाची निवड केली आहे. त्यांची नियुक्ति 6 एप्रिल 2018 पासून तीन वर्षांकरिता करण्यात आली आहे.

कमलेश दत्त त्रिपाठी बनारस हिंदू विश्व विद्यालयातील संस्कृत लर्निंग एंड थिओलॉजीमध्ये प्रोफेसर होते. सध्या ते भारत अध्ययन केंद्र, बीएचयूचे येथे अध्यक्ष आहेत. मध्य प्रदेश सरकारच्या आमंत्रणावर त्यांना कालिदास अकादेमी, उज्जैनचे निदेशक बनविण्यात आले. ते 1981 ते 1986 पर्यंत आणि नंतर 2003 ते 2007 पर्यंत निदेशक म्हणून कार्यरत होते. उज्जैनचे कालीदास अकादमीचे निदेशक असतांना त्यांनी संस्थानाला संस्कृत अध्ययन आणि थिएटरचे एक आंतरराष्ट्रीय केंद्र म्हणून आकार दिला.

1987 मध्ये प्रोफेसर त्रिपाठी यांना धार्मिक व अयुग्मक अध्ययन विभागात प्रोफेसर म्हणून नियुक्त करण्यात आले आणि त्यांनी दोन वेळा संकाय म्हणून कार्य केले. ते 2000-2003 पर्यत बनारस हिंदू विश्वविद्यालयाच्या कार्यपरिषदेचे सदस्य राहीले.

प्रो. त्रिपाठी, 2007 पासून वाराणसीच्या इंदिरा गांधी राष्ट्रीय कला केंद्रात एक सल्लागार म्हणून राहीले. प्रोफेसर त्रिपाठी यांनी देश-विदेशातील संस्थांमध्ये अध्यापनाचे कार्य केले. प्रोफेसर त्रिपाठी यांनी दर्शन, सौंदर्यशास्त्र, रंगमंच, साहित्य या विषयावर आंतरराष्ट्रीय नियतकालिकांमध्ये शोधनिबंध निहितात. संस्कृत साहित्य, भारतीय दर्शनशास्त्र व धर्मासाठी त्यांना 2007 मध्ये भारताचे राष्ट्रपती यांच्याकडून आणि संस्कृतमधून अनुवादासाठी साहित्य अकादमी दिल्लीच्या वतीने सन्मानित करण्यात आले. संगीत नाटक अकादमी, नई दिल्लीने त्यांना 2009 मध्ये फैलोशिप प्रदान केली. 2015 मध्ये त्यांना तिरुपती येथील राष्ट्रीय संस्कृत विद्यापीठाकडून महामहोपाध्याय ही उपाधि प्रदान करण्यात आली.

त्यांनी अनेक पुस्तकांचे लिखान केले असूनलेख संपादित केले आहेत. त्यांनी जापान, हॉलैंड, ऑस्ट्रिया, पोलैंड, फ्रांस, थाईलैंड, चीन, फिनलैंड, स्पेन व स्वीडन इत्यादी देशांमध्ये विविध विषयांवरील आंतरराष्ट्रीय सम्मेलनात भाग घेतला व देशातील विभिन्न सम्मेलनात भाग घेतला. त्यांच्या नियुक्तीबद्दल कुलगुरु प्रो. गिरीश्वर मिश्र, प्रकुलगुरु प्रो. आनंद वर्धन शर्मा आणि विश्वविद्यालय परिवाराकडून शुभेच्छा देण्यात आल्या आहेत.